BUNDELKHAND KI BHOGOLIK STHITI EVAM MAHATAV

Name of Author : Dr. Sushma Rani
Designation of Author : Assistance Professor
Name of Department : History
Name of organization : Pt. Jawahar Lal Nehru Govt. College, Faridabad.

बुंदेलखण्ड भारतवर्ष का हृदयस्थल है । यह मध्य भारत का एक प्राचीन क्षेत्र है । इसका प्राचीन नाम जेजाक–भुक्ति है, इसका विस्तार मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में भी है । बुंदेली इस क्षेत्र की मुख्य बोली है । भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद बुंदेलखण्ड में जो एकता और समरसता है, उसके कारण यह क्षेत्र अपने आप में सबसे अनूठा जान पड़ता है । बुंदेला शासकों और महाराजा छत्रसाल राजा बुंदेला का इतिहास होने के बावजूद बुंदेलखण्ड की अपनी अलग ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत है । बुंदेली माटी में जन्मी अनेक विभूतियों ने न केवल अपना बल्कि इस अंचल का नाम खूब रोशन किया है, और इतिहास में अमर हो गए हैं । महान चंदेल शासक विद्याधर चंदेल, आल्हा–ऊदल, महाराजा छत्रसाल, राजा भोज, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, डॉ हरि सिंह गोरे, मैथिली शरण गुप्त, मेजर ध्यान चंद, गोस्वामी तुलसीदास, माधव प्रसाद तिवारी आदि अनेक महान विभूतियों का संबंध इसी क्षेत्र से है । बुंदेलखण्ड में ही तारण पंथ का जन्म स्थान है ।

भौगोलिक स्थिति :– इतिहास, संस्कृति और भाशा को ध्यान में रखते हुए बुंदेलखण्ड बहुत विस्तृत प्रदेश है । लेकिन इसकी भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषिक इकाईयों में अद्भुत समानता है । भूगोलवेताओं का मत है कि बुंदेलखण्ड की सीमाऐं स्पष्ट हैं और भौतिक तथा सांस्कृतिक रूप से निश्चित है कि यह भारत का एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र है, जिसमें न केवल संरचनात्मक एकता, भौम्याकार तथा सामाजिकता का आधार भी एक ही है । वास्तव में समस्त बुंदेलखण्ड में सच्ची सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक एकता है ।

प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता एम. एस. अली ने पुराणों के आधार पर विंध्यक्षेत्र के तीन जनपदों विदिशा, दशार्ण एवं करूश का सोन–केन से समीकरण किया है ।

इतिहासकार जयचंद्र विद्यालंकार ने ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टियों को संतुलित करते हुए बुंदेलखण्ड को कुछ रेखाओं में समेटने का प्रयास किया है ।

वर्तमान भौतिक शोधों के आधार पर बुंदेलखण्ड को एक भौतिक क्षेत्र घोषित किया गया है और उसकी सीमाऐं इस प्रकार आधारित की गई हैं – वह क्षेत्र जो उत्तर में यमुना, दक्षिण में विंध्य प्लेटों की श्रेणियों, उत्तर–पश्चिम में चंबल और दक्षिण–पूर्व में पन्ना अजयगढ़ श्रेणियों से घिरा हुआ है, बुंदेलखण्ड के नाम से जाना जाता है। इसमें उत्तर प्रदेश के जालौन, झांसी, ललितपुर, चित्रकूट, हमीरपुर, बाँदा और महोबा तथा मध्य–प्रदेश के सागर, दमोह, टीकमगढ़, छत्तरपुर, पन्ना, दत्तिया के अलावा भिण्ड जिले की मांडेर तहसील तथा रायसेन और विदिशा जिले का कुछ भाग भी शामिल है ।

बुंदेलखण्ड का अधिकतम विस्तार स्वीकार करने वाले विद्वान प्रायः इसे उत्तर में यमुना, दक्षिण में नर्मदा, पूर्व में टोंस तथा पश्चिम में चंबल से आवृत्त मानते हैं । यह भाग उत्तरी अक्षांश $28^0$75′ तथा $26^0$50′ और पूर्वी देशांतर $77^0$52′ तथा 80^0 के मध्य स्थित है ।

इस भू–भाग का 'बुंदेलखण्ड' नाम 14वीं शताब्दी में पड़ा । इससे पूर्व यह क्षेत्र चेदि, जुझौति, जेजाकभुक्ति, विन्ध्येल खण्ड आदि नामों से अभिहित किया जाता रहा है ।

लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व के महाजनपदों के अंतर्गत चेदि का नाम आता है । यह यमुना नदी के अन्तर्गत उन देशों में एक था जो कुरूओं, मस्त्यों, काशी तथा कौरूबो से संबंध था। चम्बल के पास मस्त्यों का राज्य था । प्राचीनकाल में यह बुंदेलखण्ड के पूर्वी भाग तथा कुछ अन्य भागों में मिलाकर चेदि राज्य बनता था । आगे चलकर इसकी सीमाऐं दक्षिण में नर्मदा के तट तक पहुँच गईं ।

चेदि लोगों का उल्लेख ऋग्वेद में भी आया है । महाभारत में चेदि देश के राजाओं में उपरिचर, शिशुपाल, धृष्टकेतु, सुबाहु नाम आते हैं । युधिष्ठिर के पक्षवर्त्तियों के अन्तर्गत इसका उल्लेख है ।

कुछ विद्वानों ने बुंदेलखण्ड के इस क्षेत्र को जो धसान नदी के तट पर बसा है, दर्शाण देश से पहचानने का प्रयास किया है । यह भाग चेदि से भिन्न था । दर्शाण शब्द महाभारत तथा अन्य परिवर्तित संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त हुआ है । ललित विस्तार महावस्तु के अनुसार जम्बू द्वीप के सोलह जनपदों में से दर्शाण एक था । अनेक विद्वानों ने मध्य प्रदेश के विदिशा क्षेत्र को दर्शाण माना है ।

चंदेलों के समय में इस प्रदेश का नाम जैजाभुक्ति अथवा जेजाभुक्ति था । प्रायः यह माना जाता है कि चंदेल वंश के तृतीय राजा जेजा अथवा जयशक्ति के नाम पर इस क्षेत्र की प्रसिद्धि हुई । पृथ्वीराज चौहान के शिलालेख से यह विदित होता है कि 21वीं शताबदी तक इस देश का नाम जेजाकभुक्ति ही था ।

जुझौती बुंदेलखण्ड का प्राचीन नाम है, जहाँ जुझौतिया ब्राह्मणों का प्रभुत्व अधिक होने के कारण कदाचित् इस राज्य का यह नाम पड़ा । जुझौति प्रदेश का उल्लेख स्कन्द पुराण में भी हुआ है ।

ह्वेनसाँग ने चि–चि–टो राज्य को एक हजार ली अर्थात् 167 मील दूर उज्जैन से उत्तर पूर्व में स्थित बताया है । इसे जनरल कनिंघम ने भी जुझौति पहचाना है । इसका उल्लेख अबूरिहा में भी किया गया है । इसकी राजधानी खजुराहो को कन्नौज से 90 मील दूर दक्षिण पूर्व में स्थित बतलाया गया है । यह दूरी प्रायः दुगनी पड़ती है ।

बुंदेलखण्ड इस क्षेत्र का सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम है, जो पिछली लगभग पाँच शताब्दियों से अधिक समय से चलता आ रहा है । इस भूभाग से अधिक समय से चलता आ रहा है । इस भूभाग पर बुंदेल वंश के राजाओं का आधिपत्य होने के कारण यह नाम प्रचलित हुआ । इस वंश के नामकरण के संबंध में 'वीर सिंह चरि' तथा 'छत्रप्रकाश' में वर्णित कथा को उधृत किया जाता है । इसके अनुसार एक राजा ने विन्धवासिनी देवी को प्रसन्न करने के लिए कठिन तप किया । जब वह अपने तप से देवी को प्रसन्न न कर सका तो उसने अपनी तलवार से अपना सिर काटकर आत्म बलिदान कर दिया । इस पर देवी ने प्रसन्न होकर यह वरदान दिया कि उसके रक्त बिन्दुओं से महान् शक्तिषाली पुत्र उत्पन्न होगा, जिससे बुंदेल वंष का प्रारंभ होगा ।

'हकीकत–उल–आलिगा' में बुंदेलों की उत्पत्ति एक बांदी के पुत्र के रूप में वर्णित है । इस कथा के अनुसार गहरवार वंश के राजा हरदेव एक सेविका के साथ खैरागढ़ से ओरछा में आकर बस गए थे । उसने वहाँ के खगार राजा का वध कर दिया तथा वह बेतता तथा थरमन के बीच के प्रदेश का अधिकारी हो गया । उसके उत्तराधिकारी बुंदेला कहलाये तथा उनका राज्य बुंदेलखण्ड कहलाया । संभव है कि बुंदेलों को हीन बतलाने के लिए इस कथा को गढ़ा गया हो ।

कुछ इतिहासकारों के मतानुसार विन्ध्य प्रदेश की पहाड़ियों में बसा होने के कारण इस क्षेत्र को विन्ध्येलखण्ड कहा जाने लगा । कालांतर में यही बुंदेलखण्ड कहलाया । इस मत की पुष्टि के लिए भी पर्याप्त प्रमाणों का अभाव है ।
बुंदेलखण्ड के विस्तार के बारे में विद्वानों में बहुत बड़ा मतभेद है । इसकी सीमाओं का निर्धारण लोगों ने अपने–अपने तरीके से किया है । बुंदेल महाराज छत्रसाल के राज्य की सीमाऐं निम्नलिखित दोहे में व्यक्त की गई है –

''इत यमुना, उत नर्मदा, इत चंबल, उत टोंस ।
छत्रसाल जो लरन की, रही न काउ होंस ।।''

अर्थात् छत्रसाल का राज्य उत्तर में यमुना, दक्षिण में नर्मदा, पश्चिम में चंबल तथा पूर्व में टोंस नदी तक फैला हुआ था ।

बुंदेलखण्ड की सीमा निर्धारण में बुंदेली भाषा से प्रचलन क्षेत्र की भी सहायता ली जाती है । डॉ जार्ज ग्रियर्सन ने लिखा है कि बुंदेलखण्ड के उत्तर में यमुना, उत्तर–पश्चिम में चंबल, दक्षिण में मध्य प्रदेश के जबलपुर तथा सागर सम्भाग स्थित है । इसके दक्षिण और पूर्व में रीवा तथा मिर्जापुर की पहाड़ियाँ हैं ।

कुछ अन्य विद्वानों ने बुंदेली भाषा–भाषी प्रदेश को और भी विस्तृत माना है । यदि हम एक ही संस्कृति का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि इस आधार पर गिनाये सभी स्थानों को बुंदेलखण्ड के अन्तर्गत नहीं गिना या रखा जा सकता है । ग्वालियर को भी इस क्षेत्र में समाविष्ट करने पर मतभेद है । प्रायः यह निर्विवाद है कि झाँसी सम्भाग के पांच जिले झांसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, बादाँ और सम्भाग जिले सागर, छतरपुर, टीकमगढ़, पन्ना, दमोह, बुंदेलखण्ड की सीमा में आते हैं ।

इनके अतिरिक्त ग्वालियर की माण्डरे तहसील, दतिमा जिला, शिवपुर की बिछोर तहसील, भिण्ड जिले की लहर तहसील तथा गुना जिले की चंदेरी का भाग भी इसी बुंदेलखण्ड के अन्तर्गत आता है । उत्तर में इसकी सीमा यमुना नदी बनाती है । और दक्षिण में सागर कमीश्नरी के जिले हैं, पूर्व में इसकी सीमा रेखा टोंस नदी मानी जाती है और पश्चिम में सिंधु–नदी सीमा–विवाद में न पड़कर इसी क्षेत्र को आधार बनाया है ।

बुंदेलखण्ड ने भारत के उत्थान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । यहाँ का अतीत अत्यंत गौरवपूर्ण है । इस भूखण्ड ने एक विचित्र इतिहास दिया है । बुंदेलखण्ड के बारे में एक कहावत भी प्रचलित है 'सौ दण्डी और एक बुंदेलखण्डी'' जो बुंदेलखण्डी के संबंध में चरितार्थ होती है ।

डी. आर. भण्डारकर	:	लेक्चर्स आन ऐंशियन्ट हिस्ट्री ऑफ इंडिया
हेमचंद राय चौधरी	:	पोल्टीकल हिस्ट्री ऑफ ऐंशियन्ट इंडिया
कनिंघम, एलेक्जेंडर	:	दि ऐंशियन्ट जियोग्राफी ऑफ इंडिया, वाराणसी
परमानन्द गुप्त	:	जियोग्राफिक्स नेम्स इन ऐंशियन्ट इंडिया इन्सिक्राशन्स
एम. एल. निगम	:	कल्चरल हिस्ट्री ऑफ बुंदेलखण्ड
एस. डी. त्रिवेदी	:	बुंदेलखण्ड का पुरातत्व
एच. बी. त्रिवेदी	:	क्वाइन्स ऑफ दि रिजन ऑफ बुंदेलखण्ड
आर. के. दीक्षित	:	चंदेलाज ऑफ जेजाकभुक्ति
गोरेलाल तिवारी	:	बुंदेलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास